जैन मंदिर, बूंदी में माननीय अध्यक्ष का संबोधन

24 वें तीर्थंकर भगवान महावीर के इस मंदिर में दर्शन करने का सौभाग्य मिला। भगवान महावीर ने संपूर्ण देश के अंदर नहीं, बल्कि पूरे विश्व के अंदर उन्होंने एक विचार दुनिया को दिया। यह विचार आज पूरी दुनिया के अंदर है। अहिंसा का विचार आज हर जगह है।

उस समय, जब देश में हिंसा हुआ करती थी, पशु बलि चढ़ाने की परंपराएं होती थीं, देशों में आपस में युद्ध की स्थितियां हुआ करती थीं, परमाणु शस्त्रों का उपयोग बढ़ रहा था, उस समय भगवान महावीर के विचार, सत्य और अहिंसा का विचार, परमो धर्म: का विचार उन्होंने दिया। जो कुछ भी इस समाज का है, समाज को उसके समर्पण का विचार उनका था। इसलिए, भगवान महावीर को जैन धर्म ही नहीं, दुनिया के कई देशों के अंदर लोग जैन धर्म, जैन विचार को मानते हैं, भगवान महावीर को मानते हैं।

जो व्यक्ति अपने जीवन के अंदर जैन धर्म का पालन कर ले, उस व्यक्ति जीवन के अंदर हर चुनौती, हर कठिनाई का समाधान जैन धर्म के विचारों से मिलता है। सात्विक जीवन जीना, धार्मिक और अध्यात्मिक जीवन जीना, सत्य के मार्ग पर चलना, अपरिग्रह, जो कुछ भी इस समाज का है, ये पांच विचार भगवान महावीर जी ने दिए थे। सत्य, अहिंसा और अपरिग्रह के विचार आज भी जीवन के अंदर हम सबको अपनाने की आवश्यकता है। इन सब विचारों से हमारा जीवन सरल और सात्विक अपने आप हो जाता है।

आप दुनिया के अंदर कहीं भी चले जाएं, सात्विक भोजन किसका है? वह जैन का है, इसलिए दुनिया में कहीं बाहर जाएंगे, तो कौन सा भोजन करना है? जैन भोजन करना है, क्योंकि वह सात्विक है। फूल के अंदर जो कीड़ा होता है, उस कीड़े की हत्या का भी पाप जैन धर्म के अनुसार नहीं लेना है। जैन धर्म के विचारों का जितना भी अध्ययन आदमी करता है, उतना ही व्यक्ति सात्विक विचारों, जीवन में सत्य के मार्ग पर चलना, अपने हाथों से पुण्य का काम करना, जो छोटे से जीव की हत्या को भी पाप मानते हों, उस धर्म और दर्शन को आज दुनिया में अपनाने की आवश्यकता है। आज यहां जितने परिवार के लोग हैं, कोई व्यापार करता है, कोई उद्योग करता है, कोई सात्विक तरीके से अपना कर्म

करता है। कई लोगों को नौकरी देने का काम करते हैं और जब कभी संकट, आपदा आ जाती है तो समाज के सहयोग के लिए सब कुछ समाज को समर्पित कर देते हैं। ये संस्कार, संस्कृति जैन समाज की है और जैन समाज की इस संस्कृति हम सभी को अपनाने की आवश्यकता है। मुझे जानकारी मिली बालिका छात्रवास के लिए, यह भी पुण्य का काम है, अच्छी शिक्षा, सात्विक शिक्षा जैन छात्रवास में दी जाती है। सभी बच्चे मंदिर में जाते हैं और उनके विचार ही सात्विक हो जाते हैं। आप बालिका छात्रवास के लिए जिला कलेक्टर से बात करो, मैं पूरा सहयोग करूंगा। यह एक अच्छा विचार है कि जो दूर दराज गांव से आती है, महिलाओं को, बच्चियों को अच्छी संस्कृति, संस्कार मिलें, इससे अच्छा विचार क्या हो सकता है। जो कुछ भी है, वह समाज का है। यह तो धर्म है और मैं सभी जैन समाज के लोगों को बहुत-बहुत धन्यवाद और साधुवाद देता हूं।

परम पूज्य मुनि 108 सुधा सागर जी महाराज की कृपा है और वे जहां भी जाते हैं, अपने आप ही प्रभु की कृपा हो जाती है कि मंदिर का निर्माण करना, धर्मशाला, छात्रवास, विधालय, औषधालयों का निमार्ण करना और जैन साधु हैं, विराम, विश्राम नहीं है। उनका एक स्थान से दूसरे स्थान पर आना-जाना होता रहता है।

मेरे पर तो सुधा सागर जी महाराज का बहुत आशीर्वाद है। मेरी उनके प्रति अटूट आस्था है। मुझे जब भी मौका मिलता है, मैं उनके दर्शन करने का प्रयास करता हूं। मुनि जी टीकमगढ़ गए हैं। ऐसे संतों का हमें आशीर्वाद मिलता रहे और प्रभु की कृपा हम पर बनी रहे। जय जिनेन्द्र।